भू मि का

मन की वीणा छेड़कर वेदना के सुरों से मर्म को छू लेने वाली कथा-रस से परिपूर्ण कहानियाँ लिखने वाली शिवानी मेरी प्रिय लेखिका है, अध्ययन - पथ पर जिन लेखक - लेखिकाओं ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया, उनमें से एक हैं। कॉलेज में अध्यापन का अवसर प्राप्त होने पर मैंने समय-समय पर अनेक कथाकारों की कृतियों को पढा और पढाया। इस दौरान यदि किसी कथाकार ने मेरे अन्तर्तल को गहराई से छुआ हो तो शिवानी ने ही। शिवानी की `करिए छिमा`, `गहरी नींद` कहानियाँ पढने के बाद एक लम्बे अरसे तक मैं उनसे प्रभावित रही। बाद में जब एम.फिल. के लिए कहानी-साहित्य को लेकर अनुसन्धान करने की बात चली, तब मेरे होठों पर शिवानी का नाम पहले आना स्वाभाविक था।

शिवानी की कहानियों में शरच्चंद्रीय भावुकता और प्रेमचन्दीय यथार्थ-वादिता का गंगा-जमुना समन्वय एक साथ उपलब्ध हो जाता है। इसके अलावा कहानियों में आधुनिकता का जो पुट है, वह मुझ जैसी नयी पीढी को विशेष रुप से अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

अनुसंधान कार्य आरंभ करने पर मुझे ज्ञात हुआ शिवानी के उपन्यासों पर कुमारी शशिबाला पंजाबी द्वारा `शिवानी के उपन्यासों का रचना-विधान` गुजरात विश्वविद्यालय की एम.ए.की उपाधि के लिए लिखा गया लघु-शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हुआ है। अनुसन्धान के लिए शिवानी को निश्चित करने पर मैंने उनके कहानी साहित्य पर हुए अनुसन्धान कार्य के बारे में पता लगाने की कोशिश की, तब मैं इस निर्णय तक आ पहुँची कि शिवानी की कहानियाँ बहुचर्चित तो रही हैं किन्तु बहुसमीक्षित नहीं रही हैं। मेरी जानकारी के अनुसार शोध-प्रबन्ध के रुप में शिवानी के साहित्य का अध्ययन अपवाद रुप में ही हुआ है।

शिवानी की कहानियाँ नायिका प्रधान होने से मैंने अध्ययन के लिए उस पहलू को केन्द्रित करने का निश्चित किया। शिवानी की कहानियाँ नारी संवेदना को अपनी पूरी आत्मीयता के साथ छेड़ती हैं और पाठक के अन्तर मन में उतर कर

उद्वेलित करती हैं। शिवानी की कहानियाँ नारी मन की गहरी पड़ताल करती हैं। आप उनके सुख-दुख, उनके रिश्ते और उनके आपसी तनाव ऐसी कौशलता से रेखांकित करती हैं कि पाठक अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। आप ने अनुभवों के आधार पर नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से उकेरा है। नारी को केवल महिमान्वित नहीं किया है बल्कि आप नारी समस्याओं का उद्घाटन करके उसके वर्तमान जीवन में आमूल परिवर्तन लाना चाहती हैं। नारी को जीवन व समाज के हर क्षेत्र में आगे लाना चाहती हैं ताकि वह आगामी कल की अग्रदूत बन जाए। शिवानी जी की भारतीय नारी की अस्मिता से जुड़ी मूलभूत समस्याओं की ओर मेरे मन का झुकाव रहा। उनकी पहाड़ी तथा नगर-स्थित नारियों की समस्याएँ आज के युग में भी उतनी ही जटिल हैं, जब कि वे २५-३० बरस पूर्व थीं, जब आपने कहानियों के माध्यम से उसे चित्रित करना शुरु किया। इस बात का ठोस उदाहरण है, आपकी `धर्मयुग` (अक्तूबर १९९०) में छपी `चाँचरी कथा` है। समस्याएँ भी इतने प्रकार की हैं कि मुझे लगा एक नारी होने के नाते इन पर अनुसन्धान करने का अवसर प्राप्त हो जाए तो आनेवाली भारतीय नारी जो व्यक्तित्व-संपन्नता के बल पर अपनी अस्मिता की स्थापना और रक्षा करना चाहती है।

शिवानी जी निरंतर लिख रही हैं। कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत से संबंधित अनेक पुस्तकों की लेखिका शिवानी इधर समकालीन समाज और राजनीति पर सशक्त ढंग से लिख रही है। उनकी आनेवाली हर रचना पहली से अधिक सशक्त और बलवत्तर होती जा रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध के लिए मैंने शिवानी के छह बड़े और अन्य छोटे उपन्यासों को छोड़कर उनके प्राप्त कहानी-संग्रह, अपराधिनी` रिपोर्तीज, अन्त में हाथ आयी, धर्मयुग के अक्तूबर १९९० में छपी `चाँचरी` कथा इनको अनुसन्धान का विषय बनाया है।

अथक परिश्रम के बावजूद भी `चार दिन की`, `आमादेर शान्तिनिकेतन`, यह संस्मरण, `वातायन`, `गवाक्ष` `दरीचा`, `झरोखा`, `जालक`, झरोखा` यह निबन्ध संग्रह तथा बाल-साहित्य `अलविदा हर हर गंगे`, `राधिका रानी` तथा `स्वाभिमानी चूहा` कहीं प्राप्त नहीं हुआ। एम.फिल .के लिए नवम्बर १९९० तक का अवकाश प्राप्त हुआ। समय की पाबन्दी के कारण जितना साहित्य प्राप्त हुआ उस पर संतुष्ट होकर मैंने शिवानी के कथा-साहित्य का अनुसन्धान रुपी शिव-धनुष्य उठाने की चेष्टा की है।

यह लघु-शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक `शिवानी का व्यक्तित्व और कृतित्व` है, जिसमें शिवानी का जीवन-परिचय, साहित्य-परिचय और कृतियों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक `नारी और उसका स्वरुप` है। वैदिक काल-सूक्तिकाल, स्मृतिकारों का काल, बौद्धकाल इन कालों से लेकर आधुनिक काल स्वातंत्र्योत्तर काल तक नारी की स्थिति और रुपों में किस-किस तरह से परिवर्तन होते गये, इनकी झलक द्वितीय अध्याय में प्राप्त होती है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक `शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय` है। इसमें मैंने शिवानी के प्राप्त कहानी संग्रहों की कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक `शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रुप`। इस में मैंने शिवानी की कहानियों में चित्रित माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहन, भाभी आदि रुपों के अतिरिक्त संन्यासिनी, खूनी आदि नारी रुपों की चर्चा प्रस्तुत की है।

`शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ` शीर्षक लघु-शोधप्रबन्ध का पाँचवा अध्याय है, जिसमें नारियों की विभिन्न समस्याओं

को सूक्ष्मता से दिखाने का प्रयास मैंने किया है। नारियों की आम समस्याएँ तो हमें मालूम ही हैं, परन्तु विशिष्ट परिवेश, संस्कारों आदि से उत्पन्न समस्याओं का भी उल्लेख करने का प्रयास किया है।

अन्त में उपसंहार के बाद ग्रंथ सूचि दी है।

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध को मैं पूरा कर पायी,इसका श्रेय मेरे श्रद्धेय गुरु प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी को है। उनके मार्गदर्शन के लिए मैं उनकी अत्यन्त ऋणी हूँ।

महावीर कॉलेज,कोल्हापुर के प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील जी तथा प्रा.डॉ. .सु.श्री.लवटे जी, इन्होंने भी समय समय पर जो मार्गदर्शन किया, उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ। शाहाजी कॉलेज, कोल्हापुर की हिन्दी विभागाध्यक्षा डॉ.रजनी भागवत जी ने मेरी जो सहाय्यता की,उनकी मैं आभारी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध को मैं यह जो साकार रुप दे चुकी हूँ, इसका सारा श्रेय मैं अपने पूज्य माता-पिता,भाई-भाभियाँ साथ ही अपने पति और छह वर्षीय पुत्री पीयूषा को देती हूँ और मेरी सखी ॲडव्होकेट शैलजा मुंडरगी के प्रति कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने प्रोत्साहन के साथ मुझे यह कार्य पूर्ण करने के लिए विशेष समय भी दिया। इनके प्रति आभार मानना, नितांत औपचारिकता ही है।

जिन-जिन लोगों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप में मुझे इस लघु-शोध-प्रबन्ध को साकार रुप देने में प्रोत्साहन दिया है उनकी मैं हार्दिक आभारी हूँ।

अन्त में टंकलेखक श्री बालकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापुर इनका आभार मानती हूँ।

स्थल: कोल्हापुर। (सौ.शैलजा गौतम हन्जी)

दिनांक : : ११:१९९० :